ओं श्रीजिनायनमः ।

अथ श्रीसमयसार नाटक

बनारसीदासकृत प्रारंभः ।

दोहा--श्रीजिन बचन समुद्रको, कौंलगि होइ बखान ।
रूपचंद तौहू लिखै, अपनी मति अनुमान ॥ १ ॥

कवित्त इकतीसासर्व ह्रस्वाक्षर--करम भरम जग तिमिर हरन खग, उरग लखन पग शिवमग दरसि । निरखत नयन भविक जल वरखत, हरखत अमित भविकजनसरसि॥ मदन कदन जित परम धरम हित, सुमिरत भगत भगत सब डरसि । सजल जलद तन मुकुट सपत फन, कमठ दलन जिन नमत बनरसि ॥ १ ॥

सर्व लघु स्वरांत अच्छरयुक्त छप्पय छंद--सकल करमखल दलन, कमठ सठ पवन कनक नग । धवल परमपद रमन जगत जन अमल कमल खग ॥ परमत जलधर पवन, सजल घन सम तन समकर । पर अघ रजहर जलद, सकल जन नत भव भय हर ॥ यम दलन नरक पद छय करन, अगम अतट भव जल तरन । वर सबल मदन वन हर दहन, जय जय परम अभय करन ॥ २ ॥

सवैया इकतीसा--जिन्हके बचन उर धारत जुगल नाग, भये धरनिंद पदमावति पलक में । जाके नाम महिमा सों धातु कनक करै, पारस पाषान नामी भयो है खलक में ॥